प्रथम अध्याय

दुष्यंतकुमार व्यक्तित्व एवं कृतित्व

दुष्यंतकुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पृष्ठभूमि :

दुष्यंतकुमार स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के रचनाकार रहे हैं । वे बहुमुखी साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अवतरित हुए । उनके साहित्य का स्वर यथार्थवादी एवं मानवतावादी रहा है । उनके साहित्य से जनसाधारण का दु:ख दर्द महसूस होता है । उनके साहित्य की एक खासियत रही है कि, उन्होंने अपने साहित्य में उन्हीं पहलुओं को लिखा है, जिन्हें स्वयं उन्होंने भोगा हैं । इसी वजहसे उनके साहित्य का झुकाव वैयक्तिकता की ओर है ।

दुष्यंतकुमार आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक सशक्त साहित्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं । संसार की आधुनिकता के साथ-साथ दुष्यंतकुमार के साहित्य में आधुनिकता का विषय वैविध्य भरा हुआ है । विषय वैविध्य के कारण ही छोटी उमर एवं अल्पकालिक साहित्य साधना के बावजूद भी वे मान्यता की चोटीपर पहुँचे । आधुनिक हिन्दी साहित्य अनेक वादों-प्रतिवादों को लेकर उपस्थित हुआ है । अनेक साहित्यिक इन वादों - प्रतिवादों में फँसे रहे हैं । लेकिन इनमें से अलग किस्म का एक व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य में है, जो किसी वाद के घेरे में बँधा न रहा, वह है दुष्यंतकुमार । उन्होंने अपने साहित्य का एक अलग सा ढाँचा बनाया है, जिसमें उन्होंने स्वयं के दु:ख दर्द को, आम आदमी की पीड़ा को सफलता के साथ अभिव्यक्त किया है । उनकी इस अलगाववादी वृत्ति के कारणही वे "तारसप्तक" गुट से भी बाहर रहे है ।

दुष्यंतकुमार साहित्य की किसी एक विधा के दायरे में नहीं रहे । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं को अपनी क्लम के माध्यम से उपकृत किया है । उन्होंने इसका प्रमाण देते हुए कविता, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, समीक्षा साहित्य तथा कुछ गज़लें भी लिखीं हैं । साहित्य की इन विधाओं के माध्यमसे उन्होंने तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, और साहित्यिक वातावरण के साथ - साथ उनसे उत्पन्न समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है । उतनाही नहीं उन्होंने उनमें से कुछ समस्याओं को सुलझाने के उपाय भी सुझायें है ।

गज़ल जैसी उर्दू काव्य विधा को हिन्दी में लाने का ऐतिहासिक कार्य दुष्यंतकुमार ने किया । उन्होंने हिन्दी में विपुल मात्रा में गज़ल लिख-कर इस काव्य प्रकार को हिन्दी में रूढ़ किया । उर्दू गज़लकारों की तरह दुष्यंतकुमार ने अपनी गज़लों में प्यार और मोहब्बत के स्वर नहीं छेडे । दुष्यंतजी की गज़ले देशाप्रेम से ओतप्रोत नजर आती है । इससे इस बात का पता चलता है कि, वे रूढ़ी विरोधी साहित्यकार रहे है । उनके साहित्य को किसी एक ढाँचे में नहीं ढाला जा सकता । उन्होंने अपने साहित्य में नित्य - नये मूल्योंको प्रतिष्ठित किया है । अपने व्यक्तित्व के अनुकूल साहित्यसृजन करनेवाले दुष्यंतकुमार हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्व-पूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके है । ऐसे साहित्यकार का परिचय करा लेना युग का तकाजा है ।

(अ) व्यक्तित्व :

१) माता-पिता :

दुष्यंतकुमार जैसा साहित्यिक हिन्दी साहित्य के लिए देनेवाले उनके माता-पिता गौरवान्वित है । उनके पिताजी का नाम श्री भगवत सहाय था।

राम किशोरी उनकी माता थी । श्री भगवत सहायजी के दो विवाह हुए थे । उनका प्रथम विवाह मुरादाबाद जिले के "रहरा" नामक गाँव में एक ब्राह्मण परिवार की नारी से हुआ था । प्रथम पत्नी से उन्हें एक लड़का तथा दो लड़कियाँ हुई थी । इनमें से दो लड़कियों का देहावसान उनके शैशव काल में ही हो गया । कुछ दिनों बाद उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया । इस प्रकार युवावस्था में ही प्रथम पत्नी का देहांत होने के कारण - वश श्री भगवत सहायजीने अपना दूसरा विवाह करने का फैसला किया । उन्होंने अपनी दूसरी शादी मुरादाबाद जिले के ही "दौरारा" नामक गाँव में एक संपन्न परिवार की महिला से की । उसका नाम था राम किशोरी । राम किशोरी ने सात संतानों को जन्म दिया । इनमें से महेंद्रप्रताप नारायण सिंह त्यागी, दुष्यंतनारायण सिंह त्यागी, और प्रेमनारायणसिंह त्यागी ही जीवित रहे । इन तीनों के अलावा अन्य दो लड़के और दो लड़कियाँ अपने शैशवकाल में ही चल बसी । आगे भी मृत्यु ने उनके घर से नजर नहीं हटाई । जिसकी वजह से तेरह वर्ष की आयु में महेंद्रप्रतापनारायणसिंह तथा पच्चीस वर्ष की आयु में प्रकाशनारायणसिंह त्यागी भी इस दुनिया को छोड़ चले गये ।

इसतरह श्री भगवत सहायजी को दो पत्नियों से दस संताने प्राप्त हो गयी थीं । लेकिन अब केवल दूसरी पत्नी से उत्पन्न दो पुत्र श्री दुष्यंत-नारायणसिंह तथा प्रेम नारायणसिंह ही जीवित हैं । फिर एक दिन अचानक भगवत सहायजी का भी देहांत हो गया । इसप्रकार एक के बाद एक की मृत्यु मे रामकिशोरी को डराया जरुर लेकिन ऐसी भयानकता से न डर वह आजभी जीने की आशाएँ मन में लिए दिन काट रही है ।

२) पारिवारिक स्थिति :

श्री भगवत सहायजी का परिवार "भूमिहार ब्राह्मण" परिवार था । इसके अलावा उन्हें उनके प्रथम ससुरजीसे दहेज के रूप में जमीनदारी मिली थी । उनके प्रथम ससुर को दो लड़कियाँ थी । इसकारण संपूर्ण जमीन और जायदाद की देखभाल के लिए प्रकाशनारायण को उन्होंने गोद ले लिया । लेकिन कालांतर के बाद प्रकाशनारायण और उनके नाना का भी देहांत होने के कारण उस जायदाद के उत्तराधिकारी भगवत सहायजी ही हो गये ।

इसतरह प्रथम ससुर से मिली जमीनदारी और जायदाद के कारण भगवत सहायजी के यहाँ किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी । आर्थिक दृष्टिसे उनका घर संपन्न बना । इसी वजह से लोग उन्हें "चौधरी" कहा करते थे । उनके यहाँ रोजाना जीवन की सारी चीज़ों के साथ-साथ सुरा-सुंदरी तक के सुख मिलते थे ।

३) जन्म :

दुष्यंतकुमार का जन्म २७ सितम्बर, १९३१ को "नवादा" गाँव के उपर्युक्त "भूमिहार ब्राह्मण" परिवार में हुआ । उनकी वास्तव जन्मतिथि और कागज़ातो में दर्ज जन्मतिथि में फर्क है । उनके पिताजी ने बेटे के लिए स्कूल में जल्दी दाखिला लेने के उद्देश्य से जन्मतिथि दो वर्षों से बढ़ाकर दर्ज की थी ।

जन्मपत्री के अनुसार उनका नाम दुष्यंतनारायणसिंह त्यागी है । बचपन में वे इसी नाम से जाने-पहचाने जाते थे । परंतु परवर्ती काल में उनके नाम में परिवर्तन आ गया । सबसे पहले उनके एक मित्र रविद्रनाथ त्यागी की सलाह से उन्होंने पाठशाला के परीक्षा फॉर्मपर अपना नाम दुष्यंतकुमार

त्यागी लिख दिया । परवर्ती काल में जब वे साहित्य लिखने लगे तो उन्होंने अनेक उपनामों को लेकर साहित्य लिखा । उन्होंने "नवादिया" तथा "परदेशी" जैसे उपनामों से कविताएँ लिखीं । इन नामों से लिखी गयी रचनाओं की संख्या अल्प है । उन्होंने "दुष्यंतकुमार" नाम से ही अधिक मात्रा में साहित्य सृजन किया । इसतरह अनेक नामों-उपनामों वाले दुष्यंतकुमार उनके निकटवर्ती तथा आत्मीय लोगों में "दुश्शी" नाम से पुकारे जाते थे ।

दुष्यंतकुमार की जन्म भूमि "नवादा" उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले तथा नजीबाबाद तहसील में आती है । उनकी जन्मभूमि माननी नदी के किनारे बसी हुई है । वह प्राकृतिक सौंदर्य से विलोभनीय है । उनकी जन्मभूमिक में गन्ने और बाजरें की फसलें प्रसिध्द हैं । उनके गाँव के चारों ओर खजूर के पेड़ हैं । इसतरह प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण "नवादा" गाँव बड़ा ही विलोभनीय है ।

४) शिक्षा - दीक्षा :

दुष्यंतकुमार बाल्यकाल से ही आकर्षक व्यक्तित्व के थे । उन्हें खेलने कुदने में दिलचस्वी नहीं थी । वे सदैव प्रसन्न रहते थे । वे बहुत नटखट और लापरवाह रहते थे । वे बड़े ही शरारती, विद्रोही, निर्भीक और अलमस्त स्वभाव के थे । वे बड़े स्वाभिमानी और बुध्दिमान भी थे । इसी के कारण वे जो बात मन में ठान लेते थे, उसे पूरा करके ही चैन की साँस लेते थे ।

ऐसे दुष्यंतकुमार ने सन् १९३७ में छः वर्ष की आयु में नवादा प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लिया । उसके पश्चात कुछ साल तक नजीबाबाद में

शिक्षा ली । सातवीं कक्षा उन्होंने मुजफ्फरनगर से उत्तीर्ण की । उन्होंने सन् १९४५ में "नहटौर माध्यमिक विद्यालय" से आठवी की परीक्षा दी । तीन साल बाद सन् १९४८ में "चदौंसी इंटर कॉलेज" से सेकेंडरी की परीक्षा उत्तीर्ण की ।

शिक्षा के उन दिनों में भी दुष्यंतकुमार का स्वभाव बिलकूल नहीं बदला । वे फिर भी शरारती रहे थे । वे अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों के साथ भी शरारतें करते थे । इस तरह शरारतों में अग्रणी होने वाले दुष्यंतकुमार अध्ययन में सबसे पीछे थे । वे अध्यापकों द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर व्यंग्यपूर्ण तथा चिंतन की गहराई से देते थे । ग्यारहवीं की परीक्षा के साथ-साथ उन्होंने जीवनावश्यक स्वावलंबन और स्वाभिमान को भी आत्मसात किया था । उन्होंने पाठ्यक्रम की शिक्षा के साथ व्यावहारिक शिक्षा पर भी बल दिया। उन्होंने सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं पढ़ा । जीवन के लिए पढ़ा और जीवन में उसका उपयोग भी किया ।

दुष्यंतकुमार ने अपनी शिक्षा का सिलसिला जारी रखा । उन्होंने "प्रयाग विश्वविद्यालय" से हिन्दी, इतिहास तथा दर्शनशास्त्र विषयों को लेकर तृतीय श्रेणी में बी.ए. की उपाधि सन् १९५२ में हासिल की । शिक्षा को जारी रखते हुए उन्होंने सन् १९५४ में एम्.ए. की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की । इस समय उन्हें मार्गदर्शक के रूप में डॉ. रसाल, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. धीरेंद्र वर्मा मिले तो सहपाठी के रूप में मार्कंडेय, कमलेश्वर, अजित कुमार एवं रवींद्रनाथ त्यागी का साथ मिला ।

बाल्यकाल की तरह युवावस्था में भी उनका शरारती-पन स्पष्ट झलकता रहा । उनमें कॉलेज के विद्यार्थि जैसी स्वाभाविक मस्ती और

आवारगी भी थी । वे हर रोज अलग अलग प्रकार के कपड़े, जुते पहनते थे । इसकारण लडकियाँ उनकी ओर खींची जाती थी । महाविद्यालयीन जीवन में उन्होंने अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए पाठयक्रम के अतिरिक्त अनेक प्रकार का साहित्य पढ़ा । इसमें देवकीनंदन खत्री के उपन्यास उल्लेखनीय हैं । कॉलेज जीवन में उन्होंने काव्य कामिनी का भी हाथ थाम लिया और "विहान" नामक एक छोटी सी पत्रिका के संपादन द्वारा उसका साथ निभाया ।

दुष्यंत ने सदैव विद्यार्थी जीवन को अपनाया । उन्होंने पहले परीक्षा की दृष्टि से अध्ययन किया और बाद में ज्ञान की दृष्टि से पढ़ा । उन्होंने एम्.ए. के बाद बी.टी. पूर्ण की । उन्होंने अपनी पत्नी राजेश्वरी के साथ अंग्रेजी साहित्य से एम्.ए. की परीक्षा सन् १९७६ में उत्तीर्ण करने का निश्चय किया । परंतु निर्दयी काल ने उसे पूरा नहीं होने दिया ।

उनका महाविद्यालयीन जीवन हर युवक की तरह तूफान लेकर आया । उनका व्यक्तित्व एवं बोलचाल का ढंग आकर्षक था । ऐसे युवक के पीछे युवतियाँ चक्कर न काटती तो ही आश्चर्य । इन दिनों वे एक लड़की की चपेट में आये थे । दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते थे । उन्होंने शादी का फैसला भी किया था । परंतु मन से पारंपारिक विवाह पध्दति से नफरत करनेवाले दुष्यंतकुमार आखिरकार उसी के शिकार हो गये । वे अपनी माता-पिता की बात न टाल सकें । उन्हें अन्य लड़की से शादी के लिए मजबुर होना पड़ा । अपने मन की इस छटपटाहट को व्यक्त करते हुए उन्होंने एक जगह लिखा है -

"तुम को निहारता हूँ, सुबह से ऋतंबरा,
अब शाम हो रही है मगर मन नहीं भरा ।" [१]

---

१. साये में धूप - दुष्यंतकुमार, पृ.४६.

अपने प्रेम भाव को व्यक्त करने वाले दुष्यंतकुमार पर प्राचीन संतकवि सुरदास, तुलसीदास के अलावा छायावादी काव्य परंपरा के कवि निराला का भी प्रभाव रहा है । इनके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के सुविख्यात कवि हरिवंशराय बच्चन उनके प्रिय कवि रहे हैं । "दिनकर" के कवि और कृतित्व दोनोंसे भी वे प्रभावित रहे हैं ।

५) जीविका :

दुष्यंतकुमार का जन्म ब्रह्मण परिवार में होने के कारण उन्हें किसी भी बात की कमी नहीं थी । उन्हें दुनिया के सारे सुख मिलते थे । उनकी सौतेली माँ के मायके से उन्हें और जमीन-जायदाद मिलीं । उनकी सौतेली माँ के यहाँ कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण कानूनी तौर पर उनको यह जमीन - जायदाद मिली थी । इससे उनका परिवार और संपन्न बना । बाद में भारत आजाद होनेपर सारी रियासतें बरखास्त की गयी । उनमें दुष्यंतकुमार की जायदाद भी शामिल थीं । उन्हें अपनी जमीन-जायदाद से हाथ धोने पड़े । फिर भी उन्होंने उससे बची धन संपत्ति से बड़े पैमाने पर कृषि कार्य आरंभ किया । इस व्यवसाय को उनकी माँ आज भी चलाती है । उनके परिवार के पोषण के लिए इसका बड़ा ही उपयोग होता आया है ।

दुष्यंतकुमार पढ़े लिखें होने के कारण उनका मन कृषि व्यवसाय में नहीं लगता था । उन्हें अपनी जीविका के लिए किसी न किसी नौकरी की आवश्यकता महसूस होने लगी । वे पढ़े लिखें होने के कारण उन्हें नौकरी मिली । अपने चंचल स्वभावानुकूल एक के बाद एक अनेक नौकरियाँ की ।

उन्हें सबसे पहले सन् १९५८ में "ऑल इंडिया रेडिओ" में एक सामान्य कर्मचारी का पद प्राप्त हुआ । इस पद पर कुछ समय रहकर बाद में उससे उन्होंने छुटकारा पा लिया । इसके उपरान्त उन्होंने किरतपुर प्राईव्हेट इंटर कॉलेज में अध्यापक का कार्य किया, जो उनकी शिक्षा के अनुकूल था । परंतु कुछ समय के बाद उन्होंने यह नौकरी भी छोड़ी । कालांतर से उन्हें आकाशवाणी दिल्ली केंद्र पर नौकरी मिली । परंतु सन् १९६० में उन्हें आकाशवाणी दिल्ली केंद्र से स्थानांतरित करके भोपाल केंद्र पर लाया गया । यहाँ आते ही उन्होंने कुछ रेडिओ रूपक ध्वनि नाटक लिखें । यह काम उन्होंने आकाशवाणी के सहाय्यक निर्माता की हैसियत से किया । उनकी आकशवाणी की नौकरी भी छूट्टी । फिर कुछ समय तक उन्होंने "ट्रायबल वेलफेअर" में "डिप्टी डायरेक्टर" के पद का कार्यभार अपने कंधे लिया । लेकिन उनके विद्रोही स्वभाव ने उन्हें कभी भी रास्तेपर निरंतर चलने नहीं दिया । परिणामत: इस विभाग के मंत्री के साथ अनेक बार उनके झगड़े हुए । अंत में उन्हें इस नौकरी से भी हाथ धोने पड़े । इसतरह उन्हें नौकरियाँ मिलती और छूटती गयी । नौकरी के छुटने से उन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश किया । वैसे पूर्ववर्ती काल में भी वे साहित्य लिखते आये थे । नौकरी से निकाले जानेपर खाली समय में उन्होंने साहित्य सृजन का कार्य किया । साहित्य लेखन के साथही वे खेती का काम भी करते रहे । लेकिन उनका नसीब बलवत्तर होने के कारण वे मध्यप्रदेश के भाषा विभाग में "सहायक निर्माता" के पदपर नियुक्त हुए । इस पद पर रहकर उन्होंने प्रस्तुत विभाग को समृध्द किया ।

६) <u>विवाह</u> :

दुष्यंतकुमार ने १८ वर्ष की उम्र में अपनी शादी की । यह शादी उन्होंने ३० नवंबर, १९४९ में "डोंड़ा" नामक गाँव के श्री सूरजभान त्यागी की

सुपुत्री राजेश्वरी से की । राजेश्वरी १०वीं कक्षा उत्तीर्ण थी । उनका विवाह हिन्दु परंपराओं के अनुरूप ही हुआ । उनके नारी संबंधी विचार स्पष्ट थे । वे उसे समानाधिकारी मानते थे । वे दहेज प्रथा के विरोधी थे । दांपत्य बंधनों को श्रेष्ठ मानते थे । दुष्यंतकुमार की तरह उनकी पत्नी ने भी विवाहोपरांत बी.ए.बी.एड. किया । उसने हिन्दी और मनोविज्ञान में एम्.ए. की उपाधि प्राप्त की । राजेश्वरी जी सन् १९६२ में एक प्राध्यापिका के रूप में बुरहानपुर के एक प्राइव्हेट कॉलेज में काम करने लगी । इन दिनों वह तात्या टोपे नगर भोपाल के यहाँ "आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय" में हिन्दी विषय की व्याख्याता है । इस प्रकार दांपत्य जीवन में बँधे दुष्यत और राजेश्वरी एक-दूसरे के लिए त्याग और समर्पण करते रहे । अपार स्नेह के साथ-साथ व्यंग्य विनोद, हास परिहास करते हुए एक दूसरे को चाहते रहे । दुष्यंतकुमार अपनी पत्नी को प्यार से "राजो" नाम से पुकारते थे । अपने दांपत्य जीवन में उन्होंने तीन संतानों को जन्म दिया । उनके दो लड़के और एक लड़की थी ।

७) जीवन -

दुष्यंतकुमार का स्वभाव शरारती, निर्भीक एवं विद्रोही था । वे अकारण झगड़ा मोल लेते थे । वे किसी भी बात का संकल्प करते तो उसे पूरा करके ही चैन की साँस लेते थे । उनके शरारती स्वभाव के कारण तंग आकर बहुत से मित्र नाखुश होकर उनके दुश्मन बन जाते थे । कुछ लोग खुश होकर अधिक निकट भी आ जाते थे ।

युवावस्था में हर इन्सान अपने-अपने तरिकें से कुछ न कुछ हासिल करता है । दुष्यंतकुमार ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक उपाधियाँ प्राप्त की और उन्होंने जीवनावश्यक ज्ञान आत्मसात किया । पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त उन्होंने

स्वावलंबन तथा स्वाभिमान जैसे गुणों को अपनाया । जब भी उन्हें नौकरी से निकाला गया तब खाली समय में उन्होंने साहित्य साधना की ।

हर रोज नये कपड़े पहनना, जूते पहनना उनका शौक था । वे गोरे होने के कारण उन्हें सभी तरह के कपड़े अच्छे लगते थे । उनके बोलने का तरीका अलग था । अपनी बात को दूसरों के दिल पर छाने का तरीकाभी वे अच्छी तरह से जानते थे । इसकी वजह से कॉलिज की लड़कियाँ उनकी ओर आकर्षित होती थी । उनका जीवन संतो और आधुनिक साहित्यकारों से प्रभावित रहा है । इसी वजह से उन्होंने सदैव विद्यार्थी जीवन को अपनाया । उन्होंने जो पढ़ा उसका जीवन में प्रयोग किया । इसकारण उनका जीवन संस्मरणीय रहा ।

८) मृत्यु :

कवि दुष्यंतकुमार का स्वर्गवास ४४ वर्ष की अल्पायु में हृदय गति रुकने से हुआ । उनकी मृत्यु २९ दिसंबर, १९७५ को हुई । उनकी मृत्यु का यह दिन हिन्दी साहित्य के लिए काला दिन-सा महसूस हुआ । फिरभी उनकी साहित्य साधना के कारण वे आज भी हिन्दी साहित्य के इतिहास में निरंतर याद किये जाते हैं ।

व्यक्तित्व :

दुष्यंतकुमार की जीवनी को देखने के बाद उनके व्यक्तित्व का गौर करना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि, हर रचनाकार का साहित्य उसकी जीवनी और व्यक्तित्व की निचोड़ होती है । दुर्भाग्यवश दुष्यंतकुमार ने स्वयं अपने बारे में बहुत कम लिखा है । उनके समकालिनों ने भी दुष्यंत-

कुमार के बारे में अपवाद में लिखा है । दुष्यंतकुमार की असमय मृत्यु इसका कारण है । दुष्यंतकुमार एक रचनाकार के रूप में स्थिर और स्थायी होने के पूर्व ही चल बसे ।

रचनाकार का व्यक्तित्व दोहरा होता है - बाहरी और भीतरी । दुष्यंतकुमार के बाहरी व्यक्तित्व के बारे में बहुत कम सामग्री हाथ आती है । उनके जीवन से ही उनके बाहरी व्यक्तित्व का आलेख खिंचने के सिवा कोई चारा नहीं है । खाते-पीते खानदान में पलने के बावजूद भी वे जीवन संघर्ष को टाल नहीं पाये । इसका कारण शायद उनका संघर्षशील व्यक्तित्व ही है । वे शासकिय सेवा में ऊँचे ओहदे पा सकें परंतु उनपर टीक नहीं पाये । व्यवस्था के साथ समझौता करना उनके बस की बात नहीं थी । सामाजिक व्यवस्था, प्रशासन में होनेवाली अव्यवस्था, हेरा-फेरी, गबन से वे अक्सर क्षुब्ध होते थे । उनका यह क्षोभ काव्य की हर पंक्ति में प्रतिबिंबित है । अपनी जिंदगी में उन्होंने निरंतर तनाव सहे । इसके बावजूद भी वे जिंदा दिल जीवन जीने का प्रयास करते रहे । इसी प्रयास में उनकी जीवनविणा कब मौन हुई इसका पता भी नहीं चला ।

उनके काव्य से तथा अन्य साहित्य से उनका जो व्यक्तित्व दृष्टि-गोचर होता है, उससे स्पष्ट है कि, वे सूरा-सुंदरी के चहेता थे । हर व्यक्तिका अपना जीवन दृष्टिकोन हुआ करता है । "मन की खुशी और दिल का राज" उनके जीवन का सूत्र था । वे बेहद स्वच्छंदी तो नहीं थे परंतु उनका मन और मस्तिष्क खुला था । व्यक्ति जैसे जीता है, उसे क्या छिपाना ? धोंधी और नकाब की जिंदगी जीने में उनका विश्वास नहीं था । उनका व्यक्तित्व भीतर और बाहर से अक्खड़ फक्कड था । अपनी जिंदगी में उन्होंने अपवादात्मक प्रसंगोपर ही समझौता किया । समझौता जीने के लिए कभी-कभी आवश्यक हो जाता है ऐसी उनकी धारणा थी ।

वे एक ओर जहाँ पुराने मूल्यों को नकारते थे वही दूसरी ओर नये मुल्यों को खुले दिल से स्वीकार करने में तनीक भी नही हिचकिचाते । उनका अंतरिक व्यक्तित्व अन्तर्द्वंद्व से ग्रस्त था । अंदर ही अंदर नये-पुराने, कल्पना-यथा, व्यवस्था-अव्यवस्था, नैतिक-अनैतिक, यथार्थ और झूठ का द्वंद्व उनके मन में शायद बना रहा था । अंतर्द्वंद्व से ग्रस्त उनके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके द्वारा लिखे समग्र साहित्य में नजर आता है ।

(ब) कृतित्व :

सृजनारंभ :

"जो न देखे रवि, सो देखे कवि" उक्ति की तरह कवि युग का दृष्टा होता है । अपनी आखों से देखी युगीन स्थिति का चित्रण वह अपने काव्य में करता है । दुष्यंतकुमार ने भी अपने काव्य को युगीन काव्य बनाया है । उन्होंने समाज को अपने काव्य का विषय बनाया ।

दुष्यंतकुमार १५-१६ साल के थे । तब उनका मन द्विधा था । समाज भी द्विधा स्थिति से गुजर रहा था । समाज में अस्थिरता थी । हिन्दु-मुस्लिमों के बीच के झगड़े, निर्वासितों का प्रश्न तथा राजनीतिक व्यक्तियों की हत्याओं से समाज में तनाव की स्थिति पैदा हुई थी । इसका प्रभाव उनके कवि मन पर भी पड़ा । वे तत्कालीन स्थिति और समाज के साथ बहते गये । इस स्थिति में उन्हें जो भी विषय मिला उसको उन्होंने काव्य रूप दिया ।

दुष्यंतकुमार की स्थिति एक बहती हुई नाँव की तरह थी । ऐसीस्थिति में सन् १९४९ में उन्होंने कविता लिखना आरंभ किया । यह काल "गांधी

हत्या" का काल था । इस विषय को उन्होंने अपना काव्य विषय बनाया । इस संदर्भ में लिखी कविता, "है कौन किसी के साथ रहा" [१] द्वारा मानवता विरोधी कार्यों और गांधी हत्या की निंदा की है । उनके ऊपर राजनीतिक अशांति पूर्ण वातावरण का भी प्रभाव पड़ा था । इसका प्रमाण - "हिंन्दुस्थान के आकाश में है वेदना के घन गरजते तड़फड़ाते" [२] कविता माना जा सकता है ।

दुष्यंतकुमार ने अपने काव्य का लेखनारंभ "पहली पहचान" संकलन द्वारा किया । इसमें संकलित कविताएँ उन्होंने डी.एन्.सिंह, "नवादिया" तथा "दुष्यंतकुमार" परदेशी उपनामों से लिखीं । इन उपनामों को लेकर उन्होंने ५६ कविताएँ लिखीं हैं । इनमें कुछ ही रचनाएँ बाद में प्रकाशित हो गयी ।

कविता तो समाज का एक अभिन्न अंग होता है । समाज, राजनीति के साथ साहित्यिक वादों का भी प्रभाव दुष्यंतकुमार पर पड़ा । इन प्रभावों को उन्होंने अपनाया और छायावादी रूमानी शैली में प्रगतिवादी कविताओं की रचना की । वे वादों के चक्कर में ज्यादा नहीं रहे । उन्होंने कुछ कवियों की काव्य शैली का अनुकरण करके भी काव्य रचना की । उनका यह अनुकरण कोरा नहीं लगता । इसतरह निराला की कविता के अनुकरण पर आधारित "भिखारी" की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है -

"पेट, पीठ हैं मिले पर जीवन से मत भाग ।" [३]

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा "चिंतक" पृ.७३.
२. वही, पृ.७३.
३. वही, पृ.७४.

ऐसाही वर्णन उन्होंने कुछ हेर-फेर के साथ एक मजदूर की स्थिति का भी किया है । अत: इस काव्यपंक्तियों पर कवि निराला का प्रभाव स्पष्ट झालकता है । इस पंक्ति से साम्य रखती हुई निराला द्वारा लिखी "भिक्षुक" कविता की निम्नांकित काव्य पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथपर आता ।
पेट, पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा कुटिया टेक ।" [१]

इसतरह दुष्यंतकुमार ने अनुकरण तो किया है । मगरवह मिथ्या अनुकरण नहीं था । उसमें मौलिकता भी स्पष्ट रूप से नजर आती है ।

कवि दुष्यंतकुमार ने हरिवंशराच बच्चन, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', नरेंद्र शर्मा, क्लिोभनशास्त्री, शंभूनाथ सिंह की तरह छायावादी रूमानी गीत शैली की कविताएँ भी लिखीं हैं । छायावादी रूमानी शैली को अपनाने के कारण उनकी प्रारंभिक रचनाओं में प्रेम की स्थिती का वर्णन मिलता है । वे किशोरावस्था में प्रेमरंग में रंगे हुए थे । वे किसी लड़की से प्यार करते थे । उसकी राह देखते थे, और राह देखते-देखते जब वे थक जाते है तब वे कहते है -

"चाँद ही जब मिल न पाया तब चाँदनी का क्या करें मैं ।" [२]

इसतरह काव्यात्मक वर्णनद्वारा कवि ने छायावादी परंपरा के अनुसार आत्मा का परमात्मा के प्रति प्रेमभाव को व्यक्त किया है ।

---

१. पद्य पानिप : सं.ज्ञानवती त्रिवेदी, पृ. १२५.
२. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, चिंतक, पृ. ७४.

उनकी प्रारंभिक रचनाओं में (जो गीत है।) सौंदर्य लालसा का वर्णन भरा पड़ा है । साथ ही संसार की क्षणभंगुरता को भी अभिव्यक्त किया गया है । जिसका परिचय इस पंक्ति से होता है और उससे कवि की दार्शनिकता का भी परिचय मिलता है -

"कौन किसी का कैसा बंधन झूठी है माया ।" [१]

इसतरह विविध, वादों, प्रभावों, विश्वबंधुत्व, मानवता जैसे समाज के लिए आवश्यक बातों को अपनी रचनाओं के माध्यम से दुष्यंतकुमार ने व्यक्त किया है । इन रचनाओं पर महादेवी वर्मा की गीत शैली की छाप स्पष्ट नजर आती है । कवि दुष्यंतकुमार की प्रारंभिक रचनाओं के मूल विषय प्रेम आशा, निराशा, लालसा, बेचैनी, छटपटाहट, वेदना करुणा तथा स्वाभीमान रहे हैं ।

कवि दुष्यंतकुमार ने अनेक साहित्यिक विधाओं को रचनात्मकता से उपकृत किया है । उनका परिचय करा लेना हमारा कर्तव्य होगा ।

कविता :

कवि दुष्यंतकुमार की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं -

(१) सूर्य का स्वागत, (२) आवाजों के घेरे, (३) जलते हुए वन का वसंत, (४) साये में धूप (गज़ल संग्रह), (५) अंतिम रचनाएँ ।

रात के गुजर जाने के बाद दिन आता है । दिन की पहचान सूरज के निकलने से होती है । सब लोग अंधेरे के आलस को झटककर मन

---

१. दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा, "चिंतक", पृ. ७५.

में नयी उमँग लेकर सूर्य का स्वागत करते हैं । दुष्यंतकुमारने भी अपने जीवन के अंधेरे को झटकककर "सूर्य का स्वागत" कृति की उमँग दिल में लेकर साहित्य जगत में प्रवेश किया ।

(१) सूर्य का स्वागत :

दुष्यंतकुमार का "सूर्य का स्वागत" काव्य संग्रह ४८ कविताओं का संकलन हैं । यह संकलन सन् १९५७ में प्रकाशित हुआ । यह उनकी प्रथम प्रकाशित रचना है । इस संकलन में कवि ने अपने नीजी अनुभवों को व्यक्त किया हैं । साथ ही तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को हल करने के सुझाव दिये है । यह संकलन मानव मन की आशा, निराशा, मध्यवर्गीय व्यक्ति का जीवन चित्रण, बेचैनी, सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का असंतोष, स्वार्थपरता आदि बातों को अभिव्यक्त करता है । इस कृति में कवि ने स्पष्ट किया है कि, "संघर्ष ही जीवन है और जीवन ही संघर्ष है" । इससे कवि ने मनुष्य को परिस्थिती से दो हाथ करने का संदेश दिया है । इसमें एक ओर मानव मन की निराशा, घटन, जलन का वर्णन है, तो दूसरी ओर प्रेम का ।

(२) आवाजों के घेरे :

जब कवि दुष्यंतकुमार सूर्य का स्वागत करके दिनारंभ करने लगे तो उन्होंने "आवाजों के घेरे" कृति को लिखना आरंभ किया । इस कृति में ५१ काव्य रचनाएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन सन् १९६३ में हुआ है । कवि दुष्यंतकुमार द्वारा लिखीं गयी यह कृति अनेक विषयों को लेकर उपस्थित

- -

हुई हैं । इसमें अन्याय-अत्याचार से पिड़ित - घायल लोगों की करुण कराह भरी हुई हैं । सामाजिक स्थिति का यथार्थ वर्णन, हृदय की व्याकुलता, आशावाद, लोगों की अवसर वादिता, सामान्य जनता की पीड़ा आदि विषयों का यथार्थ वर्णन किया है । इसमें कवि की व्यष्टि भावना समष्टि के आगे समर्पित होती हुई नजर आती है ।

(३) जलते हुए वन का वसंत :

यह कृति ४५ रचनाओं को लेकर उपस्थित होती है। इसका प्रकाशन समय उपलब्ध नहीं है । इस संकलन में कवि ने अनेक विषयों को स्वर दिया है । इसमें आम आदमी की वेदना, झूठा देश प्रेम, संबंधो के खोखलेपन, सामाजिक-राजनीतिक व नैतिक मूल्यों के पराभव को अभिव्यक्त किया है । इसकी विशेषता यह है कि, यह संकलन तीन खंडोमें विभक्त हैं । इसमें कवि ने लोकतंत्र, में जनता की स्थिति, लोकतंत्र में जनता को सताने वाली समस्याएँ आदि का यथार्थ चित्रण किया हैं ।

(४) साये में धूप :

कवि दुष्यंतकुमार ने हिन्दी साहित्य में जो अपना अनुठा स्थान बनाया है इसकी वजह हैं उर्दु की काव्य विधा ग़ज़ल को हिन्दी में प्रस्तुत करना । जिसे उन्होंने हिन्दी में बड़ी सहजता के साथ प्रस्तुत किया है । यह ग़ज़ल संकलन "साये में धूप" नाम से अवतरित हुआ है । इसका प्रकाशन समय सन् १९७५ हैं । इसमें ५२ ग़ज़ले शामिल हैं ।

- -

इन ग़ज़लों के माध्यम से कवि ने स्वतंत्र भारत के लोगों की सामाजिक राजनीतिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । इसमें उन्होंने प्रेम प्यार जैसे विषय को भी स्थान दिया है । इन ग़ज़लों के माध्यम से उन्होंने अपने देशप्रेम तथा मातृभूमि प्रेम की अभिव्यक्ति की है । साथ ही जनसाधारण की स्थिति का यथार्थ चित्रण भी किया है ।

(५) अंतिम कविताएँ :

कवि दुष्यंतकुमार अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक लिखते रहे । इसका प्रमाण मृत्यु से कुछ समय पहले लिखीं उनकी ये काव्य रचनाएँ हैं । इनमें प्रमुख हैं - "अजायब घर", "तुमने देखा" और एक रचना शीर्षक रहित है जो, "चल भई गंगाराम भजन कर" शीर्षक से जानी जाती है । यह अंतिम रचनाएँ उनकी डायरी में लिखीं मिली हैं, जो प्रकाशित नहीं हुई है । इनके विषय बहुमुखी हैं । इसमें भारतीय जनता की ग्रसित स्थिति, उनके साथ शासन का व्यवहार, देशमें आया आपात काल, देश की सभ्यता, संस्कृति, मानव मूल्य, सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था और इससे निराश जनता आदि का यथार्थ वर्णन मिलता हैं । (काव्य के बारे में कवि के दृष्टिकोण की चर्चा संकलन प्रस्तावना एवं अन्य स्त्रोतों के आधार पर)

नाटक :

दुष्यंतकुमार सिर्फ कवि ही नहीं थे । उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं को भी आत्मसात किया था । इसमें नाटक भी आता है । उन्होंने सिर्फ एक ही नाटक की रचना की थी और वह था -

- -

- और मसीहा मर गया :

यह दुष्यंतकुमार द्वारा लिखा गया रेडिओ नाटक हैं । यह नाटक अप्रकाशित है । इसकी कथा-वस्तु उनके ही एक उपन्यास "छोटे छोटे सवाल" पर आधारित है । इस नाटक को उन्होंने अपनी ही बदलती हुई आवाजों में आकाशवाणी के भोपाल केंद्र से प्रसारण के लिए ध्वनित किया था । इसमें उन्होंने प्राइव्हेट कॉलेजों की राजनीतिक व आर्थिक नीतियों का विकास, संस्था चालकों की भ्रष्टाचार पूर्ण प्रणालियाँ और शिक्षकों की खुशामदी प्रवृत्तियोंपर करारा व्यंग्य किया गया है । इसमें सत्य और आदर्श के परिस्थिति के अनुरूप बदलते हुए रूप को उन्होंने स्पष्ट किया है ।

काव्यनाटक :

दुष्यंतकुमार ने एक काव्य नाटक भी लिखा है जिसे गीति नाट्य भी कहा जाता है । वह है -

एक कंठ विषपायी :

दुष्यंतकुमार द्वारा रचित यह काव्य नाटक पौराणिक कथापर आधारित है । इसका कथानक चार अंकों में विभाजित है । इसकी कथावस्तु "शिवपुराण" की "सती दाह" की कथा है । दुष्यंतकुमार ने इस नाटक के माध्यम से प्राचीन कथानक के धरातल पर आधुनिक भाव बोध को प्रस्तुत किया है । इसका मुख्य उद्देश पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं को नष्ट करना हैं ।

- -

एकांकी नाटक :

मन के कोण :

यह दुष्यंतकुमार का एक मात्र एकांकी नाटक है । रंगमंच की सुविधा के लिए इसे पाँच दृश्यों में विभाजित किया गया है । इसका कथानक आदर्श और यथार्थ की महत्वपूर्ण व्याख्या करता है । इसका नायक आदर्श का हिमायती तथा कल्पना जीवी है । नायक को अन्य पात्रों में चित्रित कर के उसका यथार्थ रूप स्पष्ट किया है । इसमें गतिशीलता, सजीवता लाने के लिए प्रेम प्रसंगो को भी प्रस्तुत किया है । इसमें हृदय की विशालता, आशा, विश्वास, घात-प्रतिघात, प्रेम के पीछे होनेवाला स्वार्थ स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है ।

उपन्यास :

जिस तरह दुष्यंतकुमार कवि, नाटककार, एकांकिकाकार, ग़ज़लकार आदि रूप में नजर आते हैं, उसी तरह वे एक उपन्यासकार के रूपमें हिन्दी साहित्य जगत में अवतरित हुए हैं । उन्होंने तीन उपन्यास लिखें हैं -

(अ) छोटे-छोटे सवाल :

यह उपन्यास सन् १९६४ में प्रकाशित हुआ है । इनका यह प्रथम प्रकाशित उपन्यास है । इसे सुविधा की दृष्टि से २६ खंडो में विभाजित किया गया है । इसमें कॉलिज के वातावरण तथा क्रिया-कलापों का व्यंग्य-पूर्ण चित्रण किया गया है । इसकी कथा को यथार्थ की भावभूमि पर देखा जा सकता है । इसके माध्यम से उपन्यासकार ने प्राइव्हेट कॉलिजों की राजनीतिक व आर्थिक नीतियाँ, संस्थाचालकों की भ्रष्टाचार पूर्ण प्रणालियाँ, शिक्षकों की खुशामदी प्रवृत्ति आदि पर करारा व्यंग्य किया है ।

- -

(ब) <u>आँगन में एक वृक्ष :</u>

यह दुष्यंतकुमार का दूसरा उपन्यास है । इसका प्रकाशन सन् १९६८ में हुआ है । इसे उन्होंने आत्मकथा शैली में लिखा है । यह उपन्यास जमींनदारों के जीवन तथा बाल मनोविश्लेषण का लेखा जोखा है । इसमें भाग्यवादी भावना के प्रति आस्था तथा परंपराओं का खंडन दोनों एक साथ अवतरित हुए हैं । भविष्य की अनिश्चितता को भी अभिव्यक्त किया गया है । यह दुष्यंतकुमार के पारिवारिक वृत्तांत का उपन्यास है। हर पात्र दुष्यंतकुमार के घर की व्यक्ति है । "छोटे" के रूप में स्वयं दुष्यंत- है । छोटे के मनोवैज्ञानिक विवेचन को बड़े विस्तार से पेश किया है ।

(क) <u>दुहरी जिंदगी :</u>

यह दुष्यंतकुमार का अप्रकाशित उपन्यास है । इसमें उन्होंने संबंधो के खोखलेपन और सच्चाइयों से भागने की इन्सानों की कोशिश को स्पष्ट किया है ।

अंत में यहीं कहा जा सकता है कि, दुष्यंतकुमार अपने जीवन में सब बातों से प्रभावित रहे हैं । उन प्रभावों को उन्होंने अपने साहित्य में यथार्थ के रूप में अंकित किया है । उन्होंने जीवन के हर एक पहलू को अपने साहित्य में स्थान दिया है । इसी कारणवश अल्पायु की जिंदगी और अल्प मात्रा में साहित्य सृजन करके भी दुष्यंतकुमार हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण हस्ति के रूप में उभरे ।

- -

निष्कर्ष :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में दुष्यंतकुमार एक बहुमुखी साहित्यकार के रूप में अवतरित हुए । च्यवालीस साल की अल्पायु में उन्होंने निरंतर पच्चीस बरस तक साहित्य सृजन किया और अपनी अमीट छाप हिन्दी साहित्य पर छोड़ी । उनका जन्म समृध्द परिवार में होकर भी उनका जीवन संघर्षमय रहा । पेट पालने के लिए उन्हें तरह-तरह की नौकरियाँ करने के लिए विवश होना पड़ा । जीवन संघर्ष के कठिण प्रसंगों से गुजरते उन्होंने कभी अपने साहित्य सृजन में खलल नहीं आने दी । आज़ादी के बाद सन् १९४९ में साहित्य सृजन आरंभ किया । अपने जीवन काल में उन्होंने तरह-तरह की साहित्य विधाओं में हस्ताक्षार किए, परंतु उनकी पहचान कवि के रूप में प्रभावी रही । उन्होंने "सूर्य का स्वागत", "आवाजों के घेरे", "जलते हुए वन का वसंत", "साये में धूप", "अंतिम रचनाएँ" इस पाँच संक्लनों का हिन्दी कविता में योगदान देकर अपनी अलग पहचान कायम की । "साये में धूप" जैसे रचना के जरिए वे गज़लकार के रूप में सर्वाधिक परिचित हुए । कवि के साथ आकाशवाणी की भी नौकरी के कारण नाट्य क्षेत्र के रूप में भी उन्होंने योग दिया । "और मसिहा मर गया" जैसा नाटक इस संदर्भ में दृष्ठव्य है । उनका काव्य नाटक "एक कंठ विषपायी" पाठक और समीक्षाकों ने काफी सराहा । "मन के कोण" शीर्षक उनका एक अंकी नाटक भी उल्लेखनीय माना जाता है । उपन्यास क्षेत्र में "छोटे छोटे सवाल", "आँगन में एक वृक्ष" जैसी रचनाएँ बहुचर्चित रहीं । "दुहरी जिंदगी" का प्रकाशन नहीं हो सका परंतु उसका भी विचार उनके सृजन के आलेख में करना जरुरी है । इस प्रकार हम देखते है कि, भौतिक समृध्दि के होते हुए भी दुष्यंतकुमार ने अपने व्यक्तिगत जीवन में जो विचार और जिंदगी का संघर्ष किया है, उसे उन्होंने बड़ी सच्चाई के साथ अपने साहित्य में प्रतिबिंबित किया । यह करते समय उन्होंने न कभी अपने उसुलों को ताक पर रखा न

जिंदगी के साथ समझौता किया । कुल मिलाकर उनका व्यक्तित्व एवं साहित्य एक जुझारू रचनाकार का ही परिचय देता है, जो नयी पीढ़ी के पाठकों को नि: संदेह प्रेरित और प्रभावित करता है ।

.....